

අල්ලාහ්ගේ ගැනවන ඔහු ව විශ්වාස නොකළ විටෙක ඔවුන්ට ඔහු දඬුවම් කරනුයේ ඇයි?

හමේ ඈඕාන ආව් සාලේ සංසාරේ කේ රඔ කේ ආති සඕර්ආ කේ ඔීඔ අන්ර කලනා හුගා ।

සාලේ සංසාරේ කේ රඔ කා ආවශ්‍යක අඔකාර, ක්සේ ඔුඔඔනා ක්සී කේ ලිආ ඔඔිත නඕී හේ, යහ හේ ක් ඔසකේ ආක හුනේ කු ස්වීකාර ක්‍යා ක්‍යා, ඔසී කී ඔඔාඔත කී ක්‍යා, ඔසකේ සාඔ ක්සී කු සාඔී න ඔහලායා ක්‍යා. වහී ආක සූඔිකර්තා හේ, ඔසී කී ඔාඔශාහත හේ, ඔසී කා ආඔේෂ ඔලතා හේ, ඔාහේ හඕ ඕානේ යා ඔකාර කර ඔේ. යහී ඈඕාන කා ඕූල හේ (ඈඕාන ස්වීකාර කරනේ ආව් කාඕ කරනේ කා නාඕ හේ). ඔසකේ අතිරිකුත හඕාලේ ආස ඔූසලා විකලුආ නඕී හේ. ඔසී කී රුශනී ඕේ ඔසාන කා හිසාඔ හුගා ආව් ඔසේ සකුා ඔී ක්‍යාආී.

සඕර්ආ කා ඔලඔා අආලාඔ හේ.

"ක්‍යා හඕ ආකුාකාරිලේ කු ආආිලේ කේ සඕාන කර ඔේගේ?" [318] [සූලා අල-කලඕ : 35]

ක්සී කු සාලේ සංසාරේ කේ රඔ කේ ඔලාඔර යා සාඔී ඔහලානේ කු අලුයාඔාර කහතේ හේ.

"කුානතේ හුආ තුඕ අලුලාහ තආලා කේ සාඔී න ඔනාඕ." [319] [සූලා අල-ඔකලා : 22]

"කු ලුග ඈඕාන රඔතේ හේ ආර අආනේ ඈඕාන කු ෂිකේ සේ නඕී ඕලාතේ හේ, ආසේ හී ලුගුේ කේ ලිආ ෂානුති හේ ආර වහී සීඔේ ලාස්තේ ආල රහේ හේ." [320] [සූලා අල-අනආඕ : 82]

ඈඕාන ආක අනඔේෂා ඕුඔා හේ, ක්සකේ ලිආ අලුලාහ, ඔසකේ ආරිෂතේ, ඔසකී ආසුතකු, ඔසකේ රසූලුේ ආර අන්තිඕ ඔින ආල විෂ්වාස රඔනා ආවශ්‍යක හේ. සාඔ හී අලුලාහ කේ නිආනලේ කු ස්වීකාර කරනා ආර ඔසේ සන්ඔුෂ්ඔ හුනා කුරුරී හේ.

"(කුඔු) ඔඔුආුේ නේ කහා : හඕ ඈඕාන ලේ ආආ. ආආ කහ ඔේ : තුඕ ඈඕාන නඕී ලාආ. ආර්තු යහ කහු ක් හඕ ඔස්ලාඕ ලාආ (ආකුාකාරී හු ගආ). ආර අඕී තක ඈඕාන තුඕහලේ ඔිලුේ ඕේ ආවේෂ නඕී ක්‍යා. ආර යඔි තුඕ අලුලාහ ආර ඔසකේ රසූල කී ආකුා කා ආලන කරුගේ, තු වහ තුඕේ තුඕහලේ කර්ඕේ ඕේ සේ කුඔු ඕී කඕී නඕී කරුගා. නි:සඔේහ අලුලාහ අති කෂඕාෂීල, අලුතන්ඔ ඔයාඕාන හේ." [321] [සූලා අල-හුකුලාත : 14]

ඔආරුකුත ආයත හඕේ ඔතාතී හේ ක් ඈඕාන ආක ඔඔඔ ආර ඕහාන ඔකුා හේ. ඈඕාන නාඕ හේ ලාකුී හුනේ, ස්වීකාර කරනේ ආර ඔුෂ හුනේ කා. ඈඕාන කී කඔ ෂ්ලේනිලේ ආව් ඔකුේ හේ ආර ඈඕාන ගඔතා-ඔඔතා රහතා හේ. ශූඔ කේ ඕාඕලුේ කු සඕඔුනේ කී කෂඕතා ආර ඔිල කා ඔුඕේ ස්වීකාර කරනා ආක ව්‍යකුිත කා ඔූසලේ ව්‍යකුිත සේ ඕිනුන හුතා හේ. ඔසී ආකල ඔසාන අආනේ රඔ කේ කඕාල ව කුලාල කේ ගුආුේ කු සඕඔුනේ ආව් රඔ කු කුානනේ ඕේ අලග-අලග හුතේ හේ.

ग़ैब के मामलों को कम समझने या सोच के संकीर्ण होने पर इंसान की पकड़ नहीं होगी, परन्तु सदैव जहन्नम में रहने से बचने के लिए कम से कम जो चीज़ उसके लिए आवश्यक है उसपर उसकी पकड़ होगी। यह आवश्यक है कि अल्लाह को एक माना जाए और यह माना जाए कि सारी सृष्टि उसी की है, सारे संसार में उसी का आदेश चलता है एवं उसी की इबादत होनी चाहिए। इसे स्वीकार कर लेने के बाद अल्लाह जिसके चाहे अन्य गुनाहों को माफ़ कर दे। इसके अलावा इंसान के पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है। या तो ईमान और सफलता या फिर कुफ़्र और बर्बादी। या तो कुछ है या फिर कुछ नहीं है।

"निःसंदेह अल्लाह यह क्षमा नहीं करेगा कि उसका साझी बनाया जाए और उसके सिवा जिसे चाहे, क्षमा कर देगा। जो अल्लाह का साझी बनाता है, तो उसने महा पाप गढ़ लिया।" [322]

ईमान ग़ैब से जुड़ा हुआ विषय है और ग़ैब के ज़ाहिर होने या क़यामत की निशानियाँ दिख जाने के बाद ईमान लाने का कोई फ़ायदा नहीं रह जाएगा। [सूरा अल-निसा : 48]

"जिस दिन तुम्हारे पालनहार की तरफ से कोई निशानी आ जाएगी, तो उस दिन उसका ईमान लाना उसको कोई काम न देगा, जो पहले से ईमान न लाया हो, या ईमान की स्थिति में कोई सत्कर्म न किया हो।" [323] [सूरा अल-अन्आम : 158]

यदि कोई व्यक्ति ईमान रखते हुए नेक कामों से लाभान्वित होना चाहता है और अपनी नेकियों को बढ़ाना चाहता है, तो यह क़यामत आने और परोक्ष के प्रकट होने से पहले होना चाहिए।

जहाँ तक उस व्यक्ति की बात है, जिसके खाते में नेक काम नहीं हैं, अगर वह हमेशा के जहन्नम से बचना चाहता है, तो उसके लिए अनिवार्य है कि वह दुनिया से इस अवस्था में निकले कि अल्लाह के सामने समर्पित हो, अल्लाह के एक होने पर विश्वास रखता हो और उसकी इबादत करता हो। कुछ पापियों को अस्थायी रूप से जहन्नम में जाना पड़ सकता है, परन्तु यह अल्लाह की चाहत के तहत है। यदि वह चाहेगा तो क्षमा कर देगा और यदि चाहेगा तो जहन्नम में डाल देगा।

"हे ईमान वालो! अल्लाह से ऐसे डरो, जैसे वास्तव में उससे डरना होता है, तथा तुम्हारी मौत इस्लाम पर रहते हुए ही आनी चाहिए।" [324] [सूरा आल-ए-इमरान : 102]

इस्लाम में ईमान का मतलब ज़बान से इक़रार करना और उसके तक्राज़े पर अमल करना है। ईमान का मतलब केवल विश्वास नहीं है, जैसा कि आज ईसाई धर्म की शिक्षाओं में है और न केवल अमल है, जैसा कि नास्तिकता में है। वह व्यक्ति जो ग़ैब पर ईमान एवं धैर्य के स्टेज में है, उसका ईमान उस व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकता है, जिसने आख़िरत में ग़ैब को देख लिया हो और उसके आगे परोक्ष प्रकट हो चुका हो। इसी तरह वह व्यक्ति जिसने मुसीबत, सख्ती, कमज़ोरी एवं इस्लाम के अंजाम से अज्ञानता की अवस्था में अल्लाह के लिए काम किया है, उस व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकता है जिसने अल्लाह के लिए उस समय काम किया हो, जब इस्लाम विजयी और शक्तिशाली हो चुका हो।

“तुम में से जिन लोगों ने विजय से पूर्व अल्लाह के मार्ग में खर्च किया तथा धर्मयुद्ध किया, वह (दूसरों के) समतुल्य नहीं, अपितु उनसे अत्यंत उच्च पद के हैं, जिन्होंने विजय के पश्चात दान किया तथा धर्मयुद्ध किया। हाँ, भलाई का वचन तो अल्लाह तआला का उन सब से है, और अल्लाह उन सब की अच्छी तरह खबर रखता है जो तुम करते हो।” [325] [सूरा अल-हदीद : 10]

अल्लाह बिना कारण किसी को दंडित नहीं करता। इंसान का हिसाब लिया जाएगा और उसे या तो बन्दों के अधिकार बर्बाद करने के कारण या फिर सारे संसारों के रब के अधिकार को नष्ट करने के कारण दंडित किया जाएगा।

वह अधिकार जिसे, सदैव के जहन्नम से नजात पाने के लिए, किसी को छोड़ने की अनुमति नहीं है, वह अधिकार है सारे संसारों के रब के एक होने, उसी की इबादत एवं उसका कोई साझी न होने को स्वीकार करना, इन शब्दों के द्वारा कि "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है और उसका कोई साझी नहीं है, मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके बंदे एवं उसके रसूल हैं, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सभी रसूल सत्य हैं और मैं गवाही देता हूँ कि जन्नत सत्य है और जहन्नम सत्य है" फिर इन शब्दों के अधिकार को पूरा करना।

इस्लाम को स्वीकार करने से किसी को न रोकना या किसी ऐसे काम का समर्थन न करना जिसका उद्देश्य इस्लामी आह्वान एवं अल्लाह के धर्म को फैलने से रोकना हो।

लोगों के अधिकारों का अतिक्रमण न करना, उनको नष्ट न करना या उनपर अत्याचार न करना।

सृष्टि या सृष्टियों से बुराई को रोकना। इसके लिए लोगों से अपने आपको दूर करना पड़े तो भी कर लेना।

कभी-कभी इंसान के पास बहुत सारे नेक काम नहीं होते हैं, परन्तु वह किसी को हानि नहीं पहुँचाता है या कोई ऐसा काम नहीं करता है जो उसके अपने आपके लिए या लोगों के लिए बुरा हो, अल्लाह के एक होने की गवाही देता है, तो उसके जहन्नम से नजात पाने की उम्मीद है।

"अल्लाह को क्या पड़ी है कि तुम्हें यातना दे, यदि तुम कृतज्ञ रहो तथा ईमान रखो और अल्लाह बड़ा गुणग्राही अति ज्ञानी है।" [326] [सूरा अल-निसा : 147]

मनुष्यों को रैंक और दर्जा के अनुसार वर्गीकृत किया जाएगा। इस दुनिया दुनिया में उनके कर्मों से शुरू होकर, क़यामत होने तक, अनदेखी दुनिया के प्रकट होने एवं आखिरत में हिसाब शुरू होने तक। क्योंकि कुछ समुदायों को अल्लाह आखिरत में आजमाएगा, जैसा कि हदीस शरीफ में आया है।

संसारों का रब प्रत्येक व्यक्ति को उसके बुरे कर्मों के अनुसार दंड देता है। दंड या तो दुनिया में ही देता है या आखिरत तक उसको टाल देता है। यह काम की गंभीरता, तौबा करने या न करने और अन्य सृष्टियों पर पड़ने वाले उसके प्रभाव अथवा उससे होने वाले नुकसान पर निर्भर करता है। दरअसल अल्लाह बिगाड़ को पसंद नहीं करता।

पिछले समुदायों, जैसे कि नूह, हूद, सालेह और लूत -अलैहिमुस्सलाम- के समुदाय और फिरऔन आदि, जिन्होंने रसूलों को झुठलाया, अल्लाह ने उनके निंदनीय कर्मों तथा उनके द्वारा किए गए अत्याचार के कारण इस दुनिया में ही उनको दंडित कर दिया, क्योंकि उन्होंने न अपने आपको रोका, न अपनी बुराई से रुके, बल्कि उसमें आगे बढ़ते ही चले गए। हूद -अलैहिस्सलाम- के समुदाय ने धरती पर अहंकार किया, सालेह -अलैहिस्सलाम- के समुदाय ने ऊँटनी की हत्या की, लूत - अलैहिस्सलाम- का समुदाय निर्लज्जता पर डट गया, शोएब -अलैहिस्सलाम- का समुदाय बिगाड़, नाप-तौल में कमी करके लोगों के अधिकार मारने पर डट गया, फिरौन की जाति ने मूसा - अलैहिस्सलाम- की जाति पर अत्याचार किया और उनसे पहले नूह -अलैहिस्सलाम- का समुदाय रब की इबादत के साथ शिर्क करने पर अड़ा रहा।

"जो व्यक्ति अच्छा कर्म करेगा, तो वह अपने ही लाभ के लिए करेगा और जो बुरा कार्य करेगा, तो उसका दुष्परिणाम उसी पर होगा और आपका पालनहार बंदों पर तनिक भी अत्याचार करने वाला नहीं है।" [327] [सूरा फुस्सिलत : 46]

"तो हमने हर एक को उसके पाप के कारण पकड़ लिया। फिर उनमें से कुछ पर हमने पथराव करने वाली हवा भेजी, और उनमें से कुछ को चीख[ने पकड़ लिया, और उनमें से कुछ को हमने धरती में धँसा दिया और उनमें से कुछ को हमने डुबो दिया। तथा अल्लाह ऐसा नहीं था कि उनपर अत्याचार करे, परंतु वे स्वयं अपने आपपर अत्याचार करते थे।" [328] [सूरा अल-अनकबूत : 40]

ଓଡ଼ିଆ ଚିତ୍ରଣା ଶୁଭକା ଓ ଚିତ୍ରଣା

୧୧୧୧୧୧: ୧୧୧୧୧: // ୧୧୧୧୧୧୧.୧୧୧/୧୧୧୧/୧୧/୧୧/୧୧୧୧/125/

୧୧୧୧୧୧ ୧୧୧୧୧୧: ୧୧୧୧୧: // ୧୧୧୧୧୧୧.୧୧୧/୧୧୧୧/୧୧/୧୧/୧୧୧୧/125/

୧୧୧୧୧୧ 21୧୧ ୧୧ ୧୧୧୧ 2026 10:02:05 ୧୧